भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड –XXVII अंक–04 28 फरवरी, 2022

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीराविशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।।

जैसे नदियों के बहुत से जल के प्रवाह स्वाभाविक ही समुद्र के ही सम्मुख दौड़ते हैं अर्थात् समुद्र में प्रवेश करते हैं, वैसे ही वे नरलोक के वीर भी आपके प्रज्वलित मुखों में प्रवेश कर रहे हैं। **श्रीमद्भगवद्गीता 11/28**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2022/13301 दिनांक 18.2.2022 के अनुसार **प्रो. सब्यासाची चटर्जी** ने 15.2.2022 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. सब्यासाची चटर्जी को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13A1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/13342 दिनांक 21.2.2022 के अनुसार **प्रो. हारून वेंकटेसन** ने 14.2.2022 से संस्थान के वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. वेंकटेसन को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13A1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/12827 दिनांक 17.2.2022 के अनुसार **प्रो. सूर्यनारायण विक्रांत कर्रा** ने 14.2.2022 से संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. सूर्यनारायण विक्रांत कर्रा को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13A1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित 'युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/11387 दिनांक 14.2.2022 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) स्वाति बिश्नाई** ने 10.2.2022 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/4349 दिनांक 23.2.2022 के अनुसार **डॉ. मदन कुमार** ने 16.2.2022 से संस्थान के ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

पुनर्नियुक्ति

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/7174 दिनांक 31.1.2022 के अनुसार **प्रो. ए.डी. राव** (वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र) को संस्थान संविधि के पैरा 13 (2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2022 तक के लिए वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

आजादी का अमृत महोत्सव

भारतीय राष्ट्रवाद के दार्शनिक साहित्यकार

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम में जनगण का अस्त्र बना बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय रचित गीत 'वंदेमातरम्' राष्ट्रीयता का महामंत्र और स्वाधीनता का मूलमंत्र बनी इस मातृवंदना 'वंदेमातरम्' को युवा रवीन्द्रनाथ ने स्वर दिया था, जो बाद में भारत के राष्ट्रगीत के रूप में मान्य हुआ....

जब भारत देश में 1857 की क्रांति असफल हो गई तब बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1838–1894) अंग्रेजी भाषा में शिक्षित 19 वर्षीय नवयुवक थे। कोलकाता (तब कलकत्ता) के प्रेसीडेंसी कालेज से बी.ए. की उपाधि लेने वाले प्रथम भारतीय युवा। उन्होंने भारतीयों पर अंग्रेजों के क्रूर दमन को बहुत नजदीक से देखा। सब कुछ देख सुनकर वह अवाक् रह गए। वह चाहते तो अपनी अंग्रेजी शिक्षा का लाभ उठाकर एक सुखी जिंदगी जी सकते थे। शुरू में वह इसी पथ की ओर अग्रसर भी हुए। पिता की आज्ञा का पालन करते हुए सन् 1858 में ही सरकारी सेवा में आ गए। सन् 1860 में खुलना के डिप्टी मजिस्ट्रेड के पद पर रहते हुए अंग्रेजी में उपन्यास और

दार्शनिक निबंध लिखने लगे थे, पर जल्दी ही उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ।

भारतीय राष्ट्रवाद के द्रष्टा: सरकारी सेवा में रहते हुए, देशवासियों पर उत्पीड़न और उनका अपमान देखते हुए बंकिम चंद्र ने अनुभव किया कि सबसे पहले बंगाल और संपूर्ण भारतवर्ष में आत्मजागरण व राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने की आवश्यकता है। उन्होंने मन ही मन इसके लिए अपनी लेखनी की प्रतिभा और मातृभाषा को माध्यम बनाने का निश्चय किया। उन्होंने बांग्ला भाषा में निरंतर सामाजिक, ऐतिहासिक और देशप्रेम के विषयों पर किताबें लिखकर इस समय के लेखकों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इतना ही नहीं बंकिम चंद्र 19वीं सदी के साहित्यकाश में एक उज्ज्वल नक्षत्र के रूप में उदित हुए और बांग्ला उपन्यास के प्रथम सार्थक सृजक बने। अपनी साहित्य रचना के माध्यम से देश में राष्ट्रीय जागरण और मुक्ति संग्राम को आंदोलित किया।

कराया देश प्रेम का दर्शन:– सर्वप्रथम 'बंग दर्शन' में प्रकाशित उनके निबंधों में हमें उनके देश के प्रति गंभीर प्रेम का दर्शन मिलता है। इसके बाद उनकी प्रथम नई कृति सन् 1865 में हमारे सामने आई। यह था उनका उपन्यास 'दुर्गेशनंदिनी'। 16वीं शताब्दी के उड़ीसा को केंद्र में रखकर मुगलों और पठानों के आपसी संघर्ष की पृष्ठभूमि में यह उपन्यास रचित है। उपन्याय की कथा ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष के लिए भारतीयों को प्रेरित किया साथ ही नायिका आयशा का जगत सिंह और तिलोत्तमा के प्रेम के लिए अपने प्रेम का बलिदान ने भारतीय संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत किया।

सन् 1869 में प्रकाशित 'मृणालिनी' उपन्यास में मुगलों के षड्यंत्र से संघर्षरत हिंदू राजा हेमचंद्र की गौरव गाथा है। इसमें नायक हेमचंद्र का देश के लिए स्वार्थ त्याग और प्रेमिका के प्रति अपनी प्रेम का बलिदान प्रशंसनीय है। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध देशप्रेम को बंकिम चंद्र ने इस उपन्यास में एक स्पष्ट रूप दिया और मातृभूमि की पूजा का सूत्रपात किया। यह पूजा विविध रूपों में सार्थक हो उठती है। 'आनदं मठ', 'देवी चौधुरानी' आदि उपन्यासों में। 'देवी चौधुरानी' स्त्री अस्मिता पर आधारित उपन्यास है। ससुराल से परित्यक्ता प्रफुल्ल नाम की लड़की देवी चौधुरानी बन जाती है, जो राबिन हुड की स्त्री प्रतिमूर्ति है। वह अमीरों से धन लेती है और देश की निर्धन जनता की मदद करती है। यह महत्वपूर्ण बात है कि बंकिम चंद्र ने उस युग में एक महिला के नेतृत्व में इस महत्वपूर्ण अभियान को प्रस्तुत किया, जब ज्यादातर स्त्रियां पर्दे में रहती थीं। अंत में देवी अपनी लोकप्रियता, बुद्धि और प्रतिभा के कारण अपने ससुराल में स्वीकृत कर ली जाती हे। इस क्रांतिकारी कथानक से उस समय की महिलाओं को प्रेरणा मिली।

पश्चिमी विचारधारा से उन्होंने स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता की भावना को ग्रहण किया और भारतीय संस्कृति को आधार बनाकर अपने उपन्यासों के कथानक में उसे मूर्त रूप दिया। उन्होंने सन् 1872 में 'बंगदर्शन' नामक साहित्यिक पत्र निकालना शुरू किया और अपने आलेखों से देशवासियों में देश के प्रति गौरव जागृत कर उनमें स्वाभिमान की चेतना जगाई।

नवीन देशप्रेम के उद्भावक–बंकिम चंद्र की राष्ट्रवादी चेतना की स्वर्णिम रश्मि है 'आनंदमठ' जिसके माध्यम से वैदिक संस्कृति की मातृभूमि की अवधारणा को वह फिर से भारतीयों के सामने ले आए। सन्यासी विद्रोह और बंगाल के वर्ष 1770 से 1774 तक के अकाल की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उनका कालजयी उपन्यास 'आनन्द मठ' पहली बार सन् 1882 में प्रकाशित हुआ और प्रकाशित होते ही यह अपने अद्वितीय कथानक के कारण बंगाल और कालांतर में संपूर्ण भारतीय साहिय व समाज पर छा गया। आनंदमठ संन्यासियों का मठ था। सभी संन्यासी साहसी और देशप्रेमी थे। इन्होंने स्वेच्छा से अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिए संघर्षरत रहने का प्रण किया था। विदेशी उत्पीड़न का खत्म करने के लिए इन लोगों ने सशस्त्र गुरिल्ला युद्ध को साधन बनाया था। खास बात यह कि इन संन्यासियों की सेना में भारतीय मुसलमान और ब्राह्मण भी शामिल थे। यह हिंदू–मुसलमान के बीच एकता का आह्वान भी था। इस उपन्यास में निहित क्रांतिकारी विचारधारा ने पराधीन भारत देश में सामाजिक और राजनैतिक चेतना को जगाने का भी काम किया और इस महाग्रंथ के द्वारा उन्होनें देश के सामने प्रस्तुत किया एक नया दर्शन और आदर्शवाद। स्वदेश प्रेम और मातृभूमि की मुक्ति के लिए बलिदान का आदर्श। इसलिए महर्षि अरविंद ने बंकिम चंद्र को ''भारतीय नव राष्ट्रवाद के ऋषि'' कहकर अभिहित किया। उनके साहित्य में हमें देश प्रेम का एक नया रूप दिखाई पड़ा। उनकी पुस्तक 'धर्मतत्व' में हम पाते हैं कि देशप्रेम उनके लिए केवल एक आदर्श नहीं वरन एक धर्म था। उन्होंने कहा देश केवल मां नहीं वरन् देश ही स्वर्ग है, देश ही धर्म है, देश ही देवता है और देश ही ह्रदय। आनंदमठ के विद्रोही संन्यासी अपने आपको भारत माता की संतान कहते थे। इस संतान समुदाय के लिए एक मात्र देवता है जननी जन्मभूमि और उनका धर्म है देशधर्म।

वंदेमातरम् के उद्घोषक: इस उपन्यास में प्रस्तुत वंदेमातरम् गीत ने देश भर में राष्ट्रभक्ति की अलख जगाई। युवा रवीन्द्रनाथ ने इस मातृवंदना को सुर दिया, जो बाद में राष्ट्रगीत के रूप में मान्य भी हुआ। यही 'वंदेमात्रम' देश को उनका दिया हुआ राष्ट्रीयता का महामंत्र और स्वाधीनता का मूलमंत्र बना। विदेशी शासन के विरुद्ध लड़ाई में जनगण का अस्त्र बना वंदेमातरम्। इस कृति का स्वतंत्रता संग्राम और क्रांतिकारी आंदोलन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में आनंदमठ का विशद प्रभाव हमें एक किंवदंती सी प्रतीत होती है।

बंकिम चंद्र ने उपन्यास में देश पराधीन युग में आजादी के लिए संघर्षरत जिन संन्यासियों का चित्र खींचा है, वे आज भी प्रासंगिक हैं। यह एक विशेष बात थी कि सरकारी नौकरी में रहते हुए सन् 1891 में सरकारी सेवा से निवृत्त होने तक बंकिम चंद्र ने अपने लेखन से देश के लोगों को राष्ट्रवाद की ओर प्रेरित किया और जनजागरण की अलख जगाई। उन दिनों यह एक बहुत कठिन काम था। उस युग में जिन्होंने अपनी लेखनी द्वारा भारतीयों में राष्ट्रीय जागरण का भाव उत्पन्न किया उनमें बंकिम चंद्र का नाम सबसे पहले लिया जाता हे।

आज स्वाधीनता के अमृत महोत्सव को मनाते हुए हमें बंकिम चंद्र की राष्ट्रीयता की अवधारणा को फिर से सामने लाने की जरूरत है, जो समस्त देशवासियों में सच्चे देशप्रेम की भावना को पुनः जागृत कर सकें।

–जयश्री पुरवार

साभार–दैनिक जागरण

24 जनवरी, 2022

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 28 फरवरी, 2022 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. ए.डी. राव, प्रोफेसर, वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र

प्रो. ए.डी. राव ने 31 मई, 1982 को संस्थान में वरिष्ठ शोध सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 29 सितम्बर, 1987 में आपको वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी–II; 28 अक्टूबर, 1991 में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी–I; 8 मई, 1995 में प्रमुख वैज्ञानिक अधिकारी; 5 अप्रैल, 2000 में सह प्रोफेसर तथा 31 जुलाई, 2002 में आपको प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

1983–84 के दौरान आप यूनिवर्सिटी ऑफ रिडिंग, यू.के. में विजिटिंग रिसर्च फेलो रहे। आप 1990–91 के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ रिडिंग, यू.के. तथा 1997–98 के दौरान फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. में विजिटिंग साइंटिस्ट भी रहे। भारतीय तटों के साथ महासागरीय अवस्था पूर्वानुमान तंत्र के लिए संख्यात्मक मॉडल विकसित करने के अनुसंधान में आपकी विशेष रुचि रही है इनमें उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के कारण तटीय बाढ़ तथा आंतरिक तरंगों के लिए विकसित संख्यात्मक मॉडल शामिल हैं क्योंकि इनका उपयोग संबंधित सरकारी संस्थानों द्वारा परिचालन उद्देश्य के लिए किया जाता है। आप आन्ध्रप्रदेश विज्ञान अकादमी (APAS) हैदराबाद के फेलो तथा राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, इलाहबाद के चयनित सदस्य हैं। आपने उपरोक्त क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया, जो आपके 200+ पीयर रिव्यूड पेपर्स के प्रकाशनों द्वारा व्यापक रूप से मान्य हैं। आपने 18 पीएच.डी. विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। आप राष्ट्रीय महत्व के कई परामर्श कार्यों तथा प्रायोजित अनुसंधानों में सक्रिय रूप से शामिल रहे। आप महासागरीय जलवायु सिस्टम की अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका के सह सम्पादक रहे हैं। आपके क्षेत्र के प्रासंगिक विषयों पर विशेष मुद्दो को सामने लाने के लिए आपको नेचुरल हजार्ड्स ऐन्ड मरीन जियोडेजी में अतिथि सम्पादक के रूप में कई बार आमंत्रित किया गया। आप ''नेचुरल हजार्ड्स'' के सम्पादकीय बोर्ड के भी सदस्य रहे हैं।

विनम्र स्वभाव एवं मिलनसार व्यक्तित्व के प्रो. ए.डी. राव अपने सहकर्मियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रहे हैं।

श्री प्रताप सिंह कलासुआ (26379) फोरमैन, वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग

श्री प्रताप सिंह कलासुआ ने 21 अप्रैल, 1995 को सहायक फोरमैन के रूप में संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको सहायक फोरमैन के रूप में मैप किया गया। 1 मई, 2007 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको फोरमैन के रूप में पदोन्नत/उन्नयन दिया गया। 21 अप्रैल, 2015 में एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको 4800 रु. के ग्रेड वेतन मे उन्नयन दिया गया। विनम्र स्वभाव के श्री प्रताप सिंह कलासुआ मेहनती एवं कर्मठ फोरमैन रहे हैं।

श्रीमती लीला सागर (25477), कनिष्ठ अधीक्षक, ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र

श्रीमती लीला सागर (भारती) ने 2 जनवरी, 1985 को अवर श्रेणी लिपिक के रूप में संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अप्रैल, 1994 को आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको प्रवर श्रेणी लिपिक के रूप में चयन किया गया। 1 मई, 1998 को आपको आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया। 1 अप्रैल, 2006 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत/उन्नयन दिया गया। 2 जनवरी, 2015 को एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको 4600/–रु. के ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। सौम्य, मधुर स्वभाव की श्रीमती लीला सागर कर्मठ एवं मेहनती कनिष्ठ अधीक्षक रही हैं।

श्री सुरेन्द्र कुमार (26514), कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, उपकरण अभिकल्प एवं डिजाइन केंद्र

श्री सुरेन्द्र कुमार ने 26 अक्टूबर, 1984 को संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेन्डेन्ट (210–290/800–1150/–रु.) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 1 नवम्बर, 1992 को आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको (950–1400/–रु.) तथा 1 मई, 2000 को कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में नियुक्त किया गया। 1 मई, 2010 को एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। श्री सुरेन्द्र कुमार परिश्रमी एवं मेहनती कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय एवं स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए

सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/U-3/2022/9020 दिनांक 7.2.2022 के अनुसार **श्री फुरकान अहमद,** पोस्ट–डॉक्टरल फेलो (कार्ट) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था, जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 2.2.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री फुरकान अहमद 2.2.2022 को संस्थान कार्य से मुक्त हो गए है।

स्नातक पूर्व अनुसंधान अवसर कार्यक्रम (UROP) के अन्तर्गत ग्रीष्मकालीन स्नातक पूर्व अनुसंधान अवार्ड (SURA) 2022 के लिए प्रोजेक्ट प्रस्ताव आमंत्रित

विद्यार्थियों में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास एकक द्वारा स्नातक–पूर्व विद्यार्थियों से वर्ष 2022 के लिए प्रोजेक्ट प्रस्ताव आमंत्रित किए जाते हैं। विद्यार्थियों को सोचने, नया करने तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने की मार्गदर्शन भावना इस परियोजना (SURA) में निहित है। विद्यार्थियों को समस्याएँ पहचानने, अध्ययन करने तथा विश्लेषण करने के साथ–साथ समाधान तैयार करना चाहिए। छात्रों को प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य करने के लिए संस्थान के विभाग/केंद्र के ही किसी संकाय सदस्य की पहचान कर लेनी चाहिए।

अवार्ड प्रदान करने हेतु दिशा–निर्देश

पात्रता:– केवल स्नातक पूर्व अध्ययन बोर्ड द्वारा शासित स्नातक पूर्व विद्यार्थी (चतुर्थ सत्रार्ध) अवार्ड के पात्र हैं। इस योजना (SURA) के अन्तर्गत प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों का CGPA7.50 या इससे अधिक होना चाहिए।

अवार्ड:– अवार्ड में 1500/–रु. की राशि प्रति सप्ताह प्रति विद्यार्थी की दर से दी जाएगी।

अवधि:– ग्रीष्म दीर्घावकाश के दौरान आठ सप्ताह।

प्रोजेक्ट कार्य पूरा करने के लिए यदि समयवृद्धि की आवश्यकता हो तो इसे अधिकतम 14 अक्टूबर, 2022 तक बढ़ाया जा सकता है। प्रगति रिपोर्ट अधिकतम अक्टूबर, 2022 के अंत तक प्रस्तुत करनी होगी। बढ़ाई गई अवधि के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

आवेदन कैसे करें:–इच्छुक विद्यार्थी अपने प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास प्रोजेक्ट पर अपने सुविधाप्रदाता से विचार–विमर्श कर सकते हैं तथा निम्नलिखित विवरण का समावेश करते हुए प्रस्ताव प्रस्तुत करें:–

1. प्रोजेक्ट का शीर्षक
2. छात्र का नाम, विभाग प्रविष्टि सं. सम्पर्क सं. तथा सी.जी.पी.ए. और सुविधाप्रदाता का नाम (प्रस्ताव के मुख्य पृष्ठ पर)
3. उद्देश्य
4. प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास परियोजना का दृष्टिकोण (approach) (प्रस्ताव में कार्य का नवीनता पक्ष स्पष्ट होना चाहिए)।
5. प्रस्तावित परियोजना कार्य करने के लिए आवश्यक बजट, अवधि एवं सुविधाएं (बजट 25,000/–रु. प्रति परियोजना तक हो सकता है)।

टिप्पणी: प्रस्ताव अकेले विद्यार्थी द्वारा अथवा अधिकतम दो विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। हालांकि, एक से अधिक SURA प्रस्ताव सुविधाप्रदाता किसी संकाय सदस्य के माध्यम से अग्रेषित किए जाते हैं, लेकिन संकाय सदस्य की सुविधा के अधीन केवल एक SURA परियोजना प्रदान की जाएगी।

प्रस्ताव टाइप की हुई प्रति हार्ड कापी तथा सॉफ्ट कापी दोनों प्रकार से प्रस्तुत की जानी चाहिए। प्रोजेक्ट प्रस्ताव विद्यार्थियों के सुविधाप्रदाता तथा सबंधित विभाग/केन्द्र अध्यक्ष एवं औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास एकक के सुविधाप्रदाता के माध्यम से (जिल्दबंद रूप से किन्तु बिना प्लास्टिक शीट कवर के) प्रस्तुत किए जाएंगे। ई मेल द्वारा सॉफ्टकॉपी rajnikapoor2711@gmail.com पर भेजी जानी चाहिए। सुविधाप्रदाता को ग्रीष्मकालीन दीर्घावकाश के अधिकांश समय उपलब्ध होना चाहिए। निदेशक की ओर से संकायाध्यक्ष, औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास द्वारा गठित समिति अवार्ड प्रस्तावों की जांच करेगी।

SURA-2022 से संबंधित गतिविधियों का कार्यक्रम निम्नानुसार है:–

1. प्रोजेक्ट प्रस्ताव प्रस्तुत करना (25 फरवरी, 2022)
2. समिति के समक्ष विद्यार्थी द्वारा प्रोजेक्ट प्रस्ताव का प्रस्तुतीकरण (अप्रैल, 2022 (अनंतिम))
3. अवार्ड की घोषणा (प्रस्तुतीकरण के एक सप्ताह बाद)
4. प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करना (परियोजना की स्वीकृत अवधि के पश्चात् दो सप्ताह के अन्दर (अधिकतम 21 अक्टूबर, 2022 तक))

अवार्ड प्राप्तकर्ता इस अवार्ड के अन्तर्गत किए गए परियोजना कार्य को संस्थान/विभाग/केन्द्र में बाद में किसी तारीख को प्रस्तुत करेंगे।

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाष: EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रक: सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेल: sagarprinters@gmail.com